# पुरखों के तर्पण का अभिनव अनुष्ठान

**माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की विद्या परिषद् ने पत्रकारिता के पूर्वजों की विरासत को नई पीढ़ी को सौंपने का एक प्रयोग प्रारम्भ किया है। ऐसे महान संपादकों के कर्म क्षेत्रों में जाकर स्थानीय पत्रों, पत्रिकाओं, पत्रकारों, संपादकों और बुद्धिजीवियों के बीच उनकी स्मृति को जाग्रत करने की यह एक कोशिश है। इस शृंखला में आयोजित प्रथम कार्यक्रम की संक्षिप्त रपट।**

गणेश शंकर विद्यार्थी के सतहत्तरवें बलिदान दिवस पर 25 मार्च 2008 को कानपुर के फूलबाग स्थित बालभवन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल ने "गणेश शंकर विद्यार्थी और कानपुर की पत्रकारिता" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। देश के ख्यातनाम पत्रकार नवनीत के संपादक श्री विश्वनाथ सचदेव और वरिष्ठ साहित्यकार एवं विद्यार्थी जी की पत्रकारिता के गंभीर अध्येता श्री सुरेश सलिल प्रमुख वक्ता थे। संगोष्ठी का शुभारंभ क्रांतिकारी गीतों के गायन से हुआ। मंचासीन विद्वानों ने विद्यार्थी जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

कानपुर नगर के वरिष्ठ एवं युवा पत्रकारों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों और नागरिकों से खचाखच भरे सभागार में संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुये विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि पत्रकारिता के मूल्यों के क्षरण के इस दौर में गणेश शंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, माधवराव सप्रे जैसे ज्योति पुरुषों के पत्रकारी कृतित्व और संघर्ष तथा राष्ट्र और समाज को इनके दाय से पत्रकारों की नई पीढ़ी को परिचित कराने की आवश्यकता को विश्वविद्यालय ने महसूस किया है। यह संगोष्ठी उसी अभियान की एक कड़ी है। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि आजादी के आंदोलन के दौर में जो पत्रकारिता मिशन थी और देश पर कुर्बान हो जाने का जज्बा तबके पत्रकारों में था आजादी मिलने के बाद इसमें भटकाव आ गया है। उस दौर में ही पत्रकारों और पत्रकारिता ने आमजन का विश्वास हासिल किया था। जन विश्वास की यही अर्जित पूँजी आज भी पत्रकारिता के साथ बनी हुई है। इस साख और विश्वास को बनाये रखने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी पत्रकारों की युवा पीढ़ी के कंधों पर है। इसके लिये उन्हें देश की श्रेष्ठ पत्रकारीय विरासत को जानना, समझना और सही मायनों में उसका अनुगमन करना होगा। उन्होंने पत्रकारिता की भाषा के क्षेत्र में पनप रही अराजकता पर भी दुख व्यक्त किया और उसमें सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया।

वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेश सलिल ने कहा कि विद्यार्थी जी की पत्रकारिता में भाषा, समाज और संस्कृति सभी समाहित थे। उनके वैचारिक सोच और लेखन का फलक इतना व्यापक था कि तत्समय के अनेक शीर्ष नेताओं की तुलना में ज्यादा श्रेष्ठ और वजनदार ठहरते हैं। विद्यार्थी जी ने पत्रकारिता के जिन मूल्यों एवं मानकों को रचा वर्तमान पत्रकारिता में उसकी केवल कौंध भर बाकी है। कानपुर की पत्रकारिता पर विचार करते समय हमें देखने होगा कि यहाँ के पत्रकार विद्यार्थी-परंपरा का निर्वहन कहाँ तक कर रहे हैं। श्री सलिल ने विद्यार्थी जी के लेखों एवं संपादकीयों के उद्धरण देते हुये कहा कि विद्यार्थी जी की शहादत से न केवल हिन्दी पत्रकारिता अपितु सम्पूर्ण मानव जाति को नुकसान हुआ है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में नवनीत के संपादक श्री विश्वनाथ सचदेव ने पत्रकारिता के व्यवसायीकरण पर चोट करते हुये कहा कि यह दुखद है कि किसानों की आत्महत्या को सामने लाने में पत्रकार रुचि नहीं ले रहे हैं। मीडिया के पतन पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुये कहा कि फिल्म रीलिज या अभिनेता की शादी, जन्मदिन जैसे छोटे-छोटे समाचारों को कई-कई दिन तक दिखाया जा रहा है, जबकि समाज के सच्चे दुख और तकलीफ को सिरे से नजरअंदाज किया जा रहा है। मीडिया में कारपोरेट जगत के प्रवेश ने इस स्थिति को और भयावह बना दिया है। आज समाचारों पर विज्ञापनदाताओं का शिकंजा कस गया है। पत्र-पत्रिकाओं का उद्देश्य अब सूचना देने के बजाय बेचना हो रहा है। आज जरूरत इस बात की है कि पत्रकारिता का मूल ध्येय आजादी की रक्षा करने का हो और उसमें उन मूल्यों का प्रतिबिम्बन हो जो विद्यार्थी जी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे वरेण्य पत्रकारों ने स्थापित किये थे। उन्होंने विश्वविद्यालय की पहल की प्रशंसा की। संगोष्ठी को कानपुर के मानस मर्मज्ञ समाजसेवी श्री बदरीनारायण तिवारी एवं विद्यार्थी जी की पौत्री सुश्री श्रीलेखा विद्यार्थी ने भी संबोधित किया। प्रारंभ में कानपुर के महापौर श्री रवीन्द्र पाटनी ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर समाजसेवी सुश्री मानवती आर्या, श्री विश्वनाथ सचदेव, श्री सुरेश सलिल एवं सुश्री श्रीलेखा विद्यार्थी को शाल-श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रदीप दीक्षित ने किया।

**डॉ. शिवकुमार अवस्थी**